भारतीय सामाजिक चिंतक : डॉ0 राम मनोहर लोहिया

पूनम सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर, डॉ० एस०पी० सिंह कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन, बालगंगा, मोतीहारी

सार

डॉ० राममनोहर लोहिया भारतीय समाजवादी आंदोलन के महान योद्धा थे। समाजवादी सोशलिस्ट पार्टी से जुड़ेसभी शीर्षस्थ नेताओं में डा0 राममनोहर लोहिया अग्रणी हैं। वे जीवनपर्यन्त समाजवादी आदर्शो व जीवन मुल्यों की रक्षा के लिए प्रयासरत व संघर्षरत रहे। उनका मानना था कि प्रखर राष्ट्रवाद के साथ अगर सामाजिक न्याय नहीं जोड़ा गया तो राष्ट्रवाद रुमानी होगा और उसमें शक्ति यदा नही होगी। उनका राष्ट्रवाद समाजवाद के अन्तर्राष्ट्रीयकरण से जुड़ा हुआ था। वे समस्याओं को राष्ट्रीयव अन्तर्राष्ट्रीय समग्रता में देखते थे। कहीं भी पीड़ा हो, कहीं भी शोषण हो, कही भी दासता हो मानव को उससे मुक्त करने के लिए डॉ0 लोहिया की आवाज सदैव गुंजती रही। डॉ0 राममनोहर लोहिया ने भारतीय संसदीय जनतंत्र में समाजवाद को एक नया आयाम दिया। डॉ0 लोहिया ने कहा कि देश को बनाने के लिए, नव निर्माण के लिए जल, फावड़ा और चुनाव तीनों की जरूरत है यह केवल नारा नहीं था, बल्कि एक नई समाजवादी विचारधारा थी। लोहिया द्वारा संसद में जो आवाज उठती थी वे गाँव के कोने-कोने में गूंज जाती थी, क्योंकि उसमें हर पीड़ित-शोषित व्यक्ति की पीड़ा की आह कराहरही होती थी। लोहिया का मानना था कि अगर वैश्विक क्रांति लानी है, अगर भारतीय व विश्व समाज को बदलना है, शोषित, उपेक्षित लोगों के हक मेंतो लोगों के मन को बदलना होगा और उनके मन को बदलने के लिए समाजवादी नजरिया को अपनाना पड़ेगा। उन्होंने कभी बनी बनाई लीक पर चलना पसंद नहीं किया। उनका कहना था कि कथनी और करनी के अंतर को पाटने के लिए हिन्दुस्तान के राजनीतिक व्यक्ति को कथनी और करनी के अन्तर को दूर करने का भरपूर प्रयास करना चाहिए।

उपभोक्तावाद एवं आर्थिक बाजारवाद के समय में जब महंगाई और आर्थिक संकट से भारत की जनता लड़ रही थी, इस समय डॉक्टर लोहिया का (दम बांधो) सिद्धांत से उस परिस्थिति का निराकरण उचित प्रतीत होता है। इस समय भारतीय राजनीति में बढ़ते जातिवाद की तोड़ हमें डॉक्टर लोहिया (जाति तोड़ो) में दिखाता है। भारतीय भाषाओं के पतन के इस दौर में डॉक्टर लोहिया का अंग्रेजी हटाओ और भारतीय जनतंत्र बचाओं का नारा अधिक प्रासंगिक लगता है। (भारतीय जनतंत्र) बचाओ का नारा इस समय अधिक प्रासंगिक लगता है। डॉक्टर राम मनोहर लोहिया के अनुसार समाजवादी का मतलब होता है। निजी संपति बढ़ाने के बजाय सामूहिक एवं देश की संपत्ति बढ़ाने की बात सोचे एवं किया जाए। खर्चीली शासन व्यवस्था, राजनेताओं का राजशाही ठाट-बाट, अपराधियों का संसद में पहुँच नीति निर्धारण करना, अर्थ का वर्चस्व, भ्रष्टाचार और तरह-तरह का घोटाला, काला धन, अमीरी-गरीबी का अनुपात तेजी से बढ़ना, यह निश्चित रूप से चिंतन और चिंता का विषय है। ऐसी परिस्थिति में डॉक्टर लोहिया का दर्शन अधिक प्रासंगिक है। राजनेताओं को उनकी जीवन एवं दर्शन से शिक्षा लेनी चाहिए। उससे समाज में संतुलन, सामंजस्य, क्षमता बढ़ेगी। क्षेत्र क्षेत्रीयता, धर्म, वर्ग, जाति, वंश, धन लोलुपता अपराध, घोटाला आदि की बढ़ती प्रवृत्ति पर रोक लगेगी। राम मनोहर लोहिया का जन्म 23 मार्च 1910 को उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले के अकबरपुर कस्बे में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा अकबरपुर में टंडन पाठशाला और विश्वेश्वर नाथ हाई स्कूल में हुई। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से इंटरमीडिएट की परीक्षा उतीर्ण कर,उच्च शिक्षा के लिए उन्होंने कलकत्ता के विद्या सागर कॉलेज में नाम लिखाया। सन् 1932 में, उन्होंने बर्लिन विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में (साल्ट एंड सिविल डिसोबिडियन्स) विषय में पी.एच.डी की डिग्री ली। बर्लिन में बे मार्क्स एवं हेगेलकी फिलॉसफी का अध्ययन किया, जिससे उन्हें समाजवाद का ज्ञान प्राप्त हुआ। भारत में वे गाँधीजी के उच्च आदर्शों, मूल्यों एवं अहिंसा के तरीकों से बहुत प्रभावित हुए। डॉक्टर लोहिया ने अपने देश के साथ-साथ संपूर्ण विश्व को एक नई समाजवाद की अस्मिता, आत्मविश्वास एवं सम्यक मानवतावादी दृष्टिकोण दी। डॉक्टर लोहिया के समाजवाद में प्रेम, क्रोध, हमदर्दी, घृणा, बुद्धि और भावना का सम्यक संतुलन विद्यमान था। यदि हम एक ऐसी विश्वसभ्यता का निर्माण कर सकें जो वर्ग, वर्ण, जाति, रंग, भौगोलिक स्तर से ऊपर उठकर मानवतावादी विकाशील समाजवाद हो, तभी

मानव अपने मानवतावादी लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगा। डॉक्टर लोहिया ने आजीवन अन्याय के विरोध आवाज उठाते रहे, संघर्ष करते रहे। उनमें बुद्ध जैसा करुणा एवं बौद्धिक साहस थी। वे सत्ताधारी अन्यायियों के लिए आतंक थे। डॉक्टर लोहिया 10 वर्ष के उम्र में लोकमान्य तिलक की मृत्यु पर 1920 में छात्र आंदोलन करवाया था। गाँधी जी के द्वारा चलाए असहयोग आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। वर्ष 1928 में साइमन कमीशन का बहिष्कार करने के लिए कलकत्ता की अध्यक्षता की। कलकत्ता में ही युवा सम्मेलन में वे जवाहर लाल नेहरू के संपर्क में आए और तत्पश्चात् उनसे घनिष्ठता हुई। उन्होंने कांग्रेस पार्टी के अंदर ही समाजवादी विचारवादियों का एक सोशलिष्ट संगठन का गठन किया। 1936 में कांग्रेस अध्यक्ष जवाहर लाल नेहरू के समय में वे पार्टी का विदेश विभाग आरंभ किया एवं उन्हें कांग्रेस पार्टी ने इस विभाग का सचिव बनाया। भारत की विदेश नीति की नींव रखने में डॉक्टर लोहिया का विशेष योगदान रहा है। डॉक्टर लोहिया ने 1942 में दो वर्षो तक भूमिगत रहकर (अंग्रेजों भारत छोड़ो) आंदोलन अपने सहयोगियों का मार्गदर्शन लघु पुस्तिकाएँ, लेख लिखकर किया। 20 मई 1944 को उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

भारतीय शासन व्यवस्था में गाँधी विचारों में समाजवादी विचारधारा को समाविष्ट कर विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था डॉक्टर लोहिया का निरंतर प्रयास था। कुटीर उद्योग, छोटी मशीनें कम पुंजी का निवेश कर अधिक से अधिक जनता के जीवन को सुखी करना उनका उद्देश्य रहा। वे जीवन पर्यन्त आम जनता विशेषकर ग्रामीण लोगों के दुख-दर्द से जुड़े रहे। वे गरीब किसानों, भूमिहीनों, खेतिहर मजदूरों के आकांक्षाओं के प्रतीक थे। सन 1947 में ही उन्होंने (किसान मार्च) का आयोजन किया। वे देश की सामाजिक, आर्थिक, वैचारिक पूर्णव्यवसाय में क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए वकालत करते रहे। सन् 1963 में वे तीसरी बार लोकसभा के लिए फरूखाबाद संसदीय क्षेत्र से उपचुनाव निर्वाचित होकर संसद में पहुँचे। चौथी बार 1967 में कन्नौज संसदीय क्षेत्र से सांसद चुने गए। जनता की समस्याओं पर वे संसद में प्रभावी ढ़ंग से आंकड़ों के साथ एवं उसका समाधान के साथ भाषण देते थे। डॉक्टर लोहिया जाति प्रथा, जन्म के आधार पर ऊँच-नीच वाली सामाजिक व्यवस्था के घोर विरोधी रहे। उनकी मान्यता थी कि यही भारत राष्ट्र का पतन, बार-बार बाहरी आक्रमण एवं शासन का अकेला एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण रहा है। उन्होंने जाति तोड़ो आंदोलन चलाया। सभी वर्गों, जातियों का सह भोज का आयोजन किया उन्होंने पिछड़े वर्गों, दलितों, आदिवासियों, अति पिछड़े अल्पसंख्यकों एंव महिलाओं की शैक्षणिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से उन्नयन की पुरजोर वकालत की। वे पूरे मन से हिंदू-मुस्लिम एकता के समर्थक थे। देश के विभाजन होने के बाद भी वे देश की एकता, सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखने के लिए अथक प्रयास किए। बहुआयामी व्यक्ति डॉक्टर लोहिया अच्छे लेखक भी थे। स्वतंत्रता के दौरान अपने विचार अनेक लेखों एवं कृतियों में से प्रमुख -1. मिस्ट्री ऑफ सर सटेफड क्रिप्स. 2. आस्पेक्ट्स ऑफ सोशलिस्ट 3. मार्क्स गाँधी एंड सोशलिज्म 4. द कास्ट सिस्टम 5. फॉरेन पॉलिसी 6. दी इंडियन एग्रीकल्चर 7. सोशलिज्म 8. हिंदूइज्म 9. क्रांति के लिए संगठन 10. समाजवादी एकता आदि के द्वारा किए। वे जननायक थे एवं हमेशा उन्हीं की भाषा में बोलते थे। डॉ. राम मनोहर लोहिया कहते थे कि भारत में लोकतंत्र अब तक वास्तविक जनतंत्र नहीं बन सकता जबतक प्रशासन अंग्रेजी भाषा के माध्यम में होगा। वे हिंदी भाषा के महान समर्थक बन गए, वे चाहते थे कि हिंदी भाषा को अंग्रेजी के स्थान पर शीघ्र ही भारत की सरकारी भाषा बना दिया जाए। अंग्रेजी भाषा बहुसंख्यक जनसाधारण के लिए गुप्त रहस्य है।

डॉ० राम मनोहर लोहिया का निधन 12 अक्टूबर 1967 को नई दिल्ली के मात्र 57 वर्ष की आयु में हुआ। उनके निधन पर शोक सभा में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने कहा-इनके असामयिक निधन से देश ने एक ओजस्वी एवं कर्मठ व्यक्ति खो दिया है। उनका सारा जीवन दलितों एवं शोषितों लोगों के हितों के लिए एक संघर्ष था। तत्कालीन सभापति श्री वी0वी0गिरी ने उन्हें देश के समाजवादी आंदोलन का संस्थापक बताया और कहा लोकसभा के सदस्य की हैस्यित से डॉक्टर लोहिया ने एक जोशीला वक्ता और उत्कृष्ट संसद विद् होने के नाते चिरस्थाई कृति अर्जित की, जो सरकार की नीतियों की पुरजोर आलोचना करते थे। उनकी मंशा और ईमानदारी पर कभी शंका नहीं हुई क्योंकि उनके मन में हमेशा लोगों की भलाई रहती थी।

लोहिया के आर्थिक विचार भी काफी प्रेरणाप्रद हैं। लोहिया का आर्थिक दृष्टिकोण उनकी पुस्तक सोशलिस्ट इकोनॉमी में दिया गया है। लोहिया के अनुसार समाजवादी अर्थव्यवस्था का अर्थ है कि उत्पादन के साधान राष्ट्र की संपति होंगे उनको कुछ लोगों तक सीमित रखने के विरोधाी थे। वे सामाजिकरण चाहते थे जिससे अधिक से अधिक लोगों का कल्याण हो सके। लोहिया का मत था कि जहाँ

तक संभव हो लघु इकाइयों और छोटे यंत्रों का उपयोग करना चाहिए। लघु स्तर पर उत्पादन का अर्थ था आर्थिक सत्ता का विकेंद्रीकरण जिससे अधिक से अधिक लोगों को अधिक से अधिक रोजगार के अवसर प्राप्त हो। लोहिया ने बड़े उद्योगों में बिजली लोहा और इस्पात आदि को शामिल किया। उद्योगों में बड़ी मशीनों के इस्तेमाल के पक्ष में थे। इनका निजी क्षेत्र में विश्वास नहीं था। क्योंकि उनके अनुसार निजी क्षेत्र द्वारा शोषण को बढ़ावा मिलता है। लोहिया ने आय विषमता कम करने पर बल दिया। क्योंकि आय में अधिक अंतर समाजवाद की संभावना को क्षीण बना देता है। लोहिया ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सुढ़ीकरण के पक्ष में थे। वे देश की उन्नति के लिए कृषि के उत्थान को आवश्यक मानते थे। कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था ग्रामीण जीवन के लिए आवश्यक है। अत: कृषि का विकास भारत की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। लोहिया के सामाजिक विचार भी काफी अनुकरणी रहे हैं। सामाजवाद न तो संपति का सिद्धांत है और ना राज्य का बल्कि इन सबसे ऊपर यह एक जीवन दर्शन है। अत: इस दृष्टि से इसका संबंध जीवन के प्रत्येक पहल से सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक इस संबंध में जैसा राम मनोहर लोहिया ने कहा है। अगर समाजवाद का एक अंग लिया जाता है तो समाजवाद खंडित रह जाता है इसलिए एक सच्चे समाजवादी होने के नाते राम मनोहर लोहिया ने समाजवाद के हर पहलू पर विचार किया है। इसमें समाजवाद का सामाजिक पहलू भी शामिल हैं।

निष्कर्ष:

राम मनोहर लोहिया की अपनी एक सम्यक् दार्शनिक दृष्टि थी। वे सिद्धान्त और कार्यक्रम एवं नीति के परस्पर संबंध को अच्छी तरह से जानते थे। वे सिद्धान्त को लंबे दौर के कार्यक्रम-नीति की और कार्यक्रम-नीति को वे छोटे अरसे के सिद्धान्त की उपाधि देते थे। उनकी सभी नीतियों में अन्योन्याश्रित संबंध रहता था। इस सम्यक्ता को समझे बिना उनकी किसी एक नीति को या कार्यक्रम को कार्यान्वित नहीं किया जा सकता। लोहिया का मानना था कि वर्तमान राज्य दो खंभों पर टिका है और केन्द्रीय तथा प्रादेशिक खंभों के बीच ही राज्य सत्ता बंटी हुई है। उनका ध्येय था कि समाजवादी ऐसे राज्य करेंगे। जिला व ग्राम पंचायतों को राज्य की आमदनी का एक-एक चौथाई हिस्सा मिलेगा और इसी अनुपात में सरकारी खर्च भी इन्हीं के द्वारा होगा। इन पंचायतों को किन्हीं निर्दिष्ट विषयों का कानून बनाने का अधिकार भी रहेगा और योजनाओं के उचित अंश भी इन्हीं के द्वारा संपादित किए जाएंगे। लोहिया का यह दृष्टिकोण पूरी तरह से सत्ता के विकेन्द्रीकरण व हिंसक असंतुलन को दूर करने एवं जनता का शासन बनाने के उच्चतर समाजवादी आदर्श को रेखांकित करता है।

वस्तुत: डॉ0 लोहिया का समाजवाद मूलत: समता, समानता, न्याय पर आधारित है। उन्होंने सदैव गैर-बराबरी को मिटाने, सामाजिक विषमता को खत्म करने, समतामूलक समाज के निर्माण करने पर विशेष बल दिया। वे साम्राज्यवाद, पँजीवाद व मशीनीकरण के भी विरोधी थे। उन्होंने सदैव मानवाधिकारों, गरीबों-दलितों व पिछड़ों एवं नारी के हक-हकूक के लिए, उन्हें न्याय, अधिकार व इंसाफ दिलाने की लड़ाई लड़ते रहे। डॉ0 लोहिया मानवता, प्रेम, सहिष्णुता के महान पुजारी थे। वे सदैव भाईचारा, मैत्री, करुणा व बेइंसाफी के खिलाफ लड़ते एवं जुझते रहे। उनके हृदय में शोषितों, पीड़ितों, मेहनतकश इंसानों के प्रति विशेष हमदर्दी रही। उन्होंने भारत के प्राय: हर आंदोलन में हिस्सा लिया जो भारत की स्वतंत्रता व आवाम के अधिकारों से जुड़ा हुआ था। उनके समाजवाद में शोषणविहीन, अन्यायविहीन समाज की परिकल्पना थी। उनका मिशन केवल रामराज की स्थापना नहीं,बल्कि सीताराम राम की भी स्थापना करना था, इसलिए उन्होंने नर-नारी समानता की बात की।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. डॉ0 वी0पी0 वर्मा-आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन पब्लिकेशन अग्रवाल, आगरा।
2. डॉ0 वी0 एल0 फारिया, भारतीय राजनीतिक चिंतन, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा।
3. डॉ0 राममनोहर लोहिया - डा0 गणेष प्रसाद, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना , पृ0 11
4. डॉ0 राममनोहर लोहिया-एम जी कमाल, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, पृ0 97
5. ए. अल्फादुराई 20वीं शताब्दी में भारतीय राजनीतिक चिंतन साउथ एशियन पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
6. दीक्षित ताराचन्द डॉ0 राम मनोहर लोहिया का समाजवाद दर्शन-लोक भारती पब्लिकेशन, इलाहाबाद।
7. डॉ0 राम मनोहर लोहिया- इतिहास चक्र, हिंदू बनाम हिंदू, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
8. कथाक्रम डॉ० लोहिया, डॉ० ओमनाथ पाल-प्रमुख राजनीतिक विचारक एवं विचार धाराएँ-कमल प्रकाशन इंदौर,मध्य प्रदेश।